— म्रत्र 1) ablesen, einsammeln: पुष्पाएयवचिन्वतीम् MBB. 3,13151. प्रमान्यवचेतुम् Kathás. 22,85. Çir. Ch. 45,4. गुञ्जाफलान्यवचित्य Pańkat. 93,4. Sáv. 5,107. Mit doppeltem acc. (vgl. u. उद्)ः वृत्तमवचिनाति फलानि P. 1,4,51, Sch. Vop. 8,6. Vgl. म्रवच्य, म्रवचायिन् — 2) abziehen, zurückschlagen (ein Gewand): म्रव्यस्य चिन्वती मुचान्युषा याति RV. 3,61,4. — 3) म्रवचित erfüllt, bewohnt: प्रतावचिता दिशम् Jaśńad. 1,13. Wohl nur fehlerhaft für म्राचरित, wie in beiden Ausgg. des R. gelesen wird.

— म्रा 1) anhäufen, ansammeln: वर्क्: Kitj. Ça. 1,3, 15. कर्माएया-चिनुते उसकृत् Buig. P. 4,29,78. म्राचितरातकाम angehäuft Gobb. 4,6, 11. 9,7. यादिवाचितनत्त्रम Hariv. 12085. प्रामिम्वाचितम् geschaart Av. 4,7,5. — 2) bedecken, beladen mit: शैलेरिवाचिनाडूमिम् Bbatt. 17, 69. म्राचिचाय स तै: (सायके:) सेनामाचिकाय च राघवा 14,46. म्राचिक्यात च भूयो ऽपि राघवा तेन पन्नगी: 47. म्राचित bedeckt, beladen: यवाचित mit Gerste beladen Kitj. Ça. 15,8,21. Litj. 9,4,19. तां शिराचितां रृष्ट्वा न-दीम् MBb. 1,3993. श्रशताचित: 6,5743. R. 6,20,23. वनराजी — कुमुमा-चिता MBb. 13,1393. Kir. 5,37. पिउकामि: Suça. 1,302,15. क्तिमवांश्च — म्रोतर्धातुभिराचित: Hariv. 12002. Andere Beispiele s. u. म्राचित 1,6. — Vgl. म्राकाय, म्राचय, म्राचित.

- म्रन्वा s. म्रन्वाचयः
- म्रवा anhäusen, einsammeln: म्रवाचिनाति कार्माणि न च संप्रचिना-ति क MBB. 12,5952.
 - पर्या s. पर्याचितः
- समा 1) zusammenstellen, au/häu/en: भाएउनि समाचिताति P. 3, 1,20, Sch. इन्धनानि समाचितात् स्वारा प्राप्तिः स्वारा त् वाससा राण्ठिः स्वारा समाचितः MBn. 2,2304. कार्यं पद्म स्तृतस्य द्रविणं तत्समाचितः स्वारा स्वारा स्वारा पद्म पद्म विणं तत्समाचितः स्वारा स्वारा
- उद् ablesen, einsammeln: शिलानुम्चिन्वत: Кил. zu М. 3, 100. पुष्पाएपुम्चित्य Катна́з. 22, 109. लतामनुम्चितस्फीतपुष्पभारानताम् Vір. 209. mit doppeltem acc. (vgl. u. म्रव): उम्चिक्यिरे (उम्चिच्यिरे v. l.) पुष्प-फलं वनानि Внатт. 3,38. Vgl. उच्चय.
 - म्रायद् अम्यच्चियः
- समुद्द 1) aneinanderreihen, zusammenstellen, anreihen: एवं वर्णास्य वर्णास्य समुच्चीय सरुस्रशः nach den Farben MBB. 2,2087. समृच्चित्य SIDDB. K. zu P. 8,1,12. इति स्वरात्ता निपुणं समृच्चिताः Kår. 2 aus Kåç. zu P. 7,2,10. समुच्चीयमानिक्रयावचनात् Sch. zu P. 3,4,3. श्रिपशिब्देन स्वमते संयोगाभावादिः समुच्चीयते Scb. zu Kår. 1,28. 2) ablesen, einsammeln: श्रङ्गलीभ्यामेकेकं कणं समुच्चित्वा Baudb. bei Kull. zu M.4,5. Vgl. समुच्चय.
 - उप 1) aneinanderreihen: पानि धर्मे क्यालान्युपचिन्वित्त वेधर्मः

TS. 1,1,2,2. — 2) aufhäufen, ansammeln, vermehren, verstärken: चा-पान्यासमर्धेन्डुमालेः शग्रात्सिकै रूपचितवलिम् Мहता. ४६. पूर्वापांचतकायक MB#. 14,538. मयाप्युपचिता धर्मस्ततो उर्धे प्रातेगृह्यताम् (vgl. धर्मापचायि-न् MBn. 13,6275 im Gegens. zu धर्मापचायिन् 3,11157) 5,4073. 13,5772. यड्रपचितमन्यतन्मिन प्रभाष्ट्रभम् VARM. LAGHUGST. 1, 3. धातू नुपचिनाति Seca. 1,53,14. मैालिगतस्येन्द्राचिंशरैर्दशनाष्ट्राभः। उपचिन्वन्प्रभा तन्वीम् Kumaras. 6,25. यथा चोपचिता कोति: क्छेन Buig. P. 7,10,51. pass. sich aufhäusen, sich anhäusen, sich vermehren, sich verstärken, zunehmen: पर्वतैरूपचोषद्भिः पतमानैस्तथा परैः। स देशो यत्र वर्ताम गर्केव समप्रखत ॥ МВн. 3, 12171. रजिस चापचीयमाने Suça. 1,44,18. द्वीणा ऽट्यपचीयते प-नश्चन्द्रः Вильтв. 2,84. चैर्प्यकान्तमायाभिरधर्मश्चापचीयते МВн. 12,8501. एक एव ममैवातमा बद्धधाय्यपचीयते १४,७००. म्रधा ४६: पश्यतः कस्य म-किमा नापचीयते Hir. 11,2. ऋमापचीयमानेन सेवाभ्यासेन Rááa-Tar. 3, 151. उपाचापिष्ट सामर्ह्य तस्य Buatt. 6,33. sich verbessern, sich gut stehen, Vortheil ziehen: त्रय: पर्वि क्लिश्यित सातिण: प्रतिभू: क्लम् । च-बार्स्तूपचीयते विष्र माखी र्वाण्ड्रपः ॥ M. 8,169. उपचित vermehrt, in reichlichem Maasse vorhanden, was eine Fülle erlangt hat: द्विपत: प-श्य प्रतीणान्म्वतिक्रमात् । संप्रत्यपचितान् Baks. P. 6,7,23. फलै ह्यचितैः МВн. 3,11034. वियद्वपचितमेघम् Внактр. 1,42. °ТН Мвсн. 111. स्रप्नै: 103. (स्रश्चमेधैः) मक्।विभूत्यापचिताङ्गर्दात्तर्णीः Batc. P. 9,4,22. ॰मांस VA-หลัก. Laghuéāt. 2,27. °गात्रसंधि Bṛн.S.2, Anf. समीपचितचारू निगुहगुल्फी। (पौरे) 68,1. उपचित्रसमवृत्तलम्बवाङ्क 69,14. ०रेक् 67,100(101). पर्याधीरा R. 3,52,25. उपचितमकारीमशकर्ण Suga. 1,124,12. शरीर 130,12. Месн. 33. तं रृष्ट्रा सर्वाङ्गापचितम् МВн. 13,4460. योगोपचिताम् — मायास् Выіс. P. 3,27,30. 9,12. 5,1,30. 6,17. dem es wohlgeht: म्रपयेन प्रवचते न जा-त्पचिता अपि सः RAGH. 17,54. was gut von Statten geht: सर्गे उनपचिते Вийс. Р. 3,20,47. उपचित = समाहित Н. ап. 4,101. = निर्दिग्ध Н. 449. = निर्दिग्ध AK. 3,2,38. = द्राध (wohl nur fehlerhaft) H. an. Med. t. 189. = মৃদ্র und মৃদ্র diess. — 3) überschütten, bedecken: নুন: সুত্র-लितैर्वाणैः सर्वतः सापचीयते (°त v.l.) । उपचीयमानश्च मया मकास्त्रेण мвн. 3, 11969. pass. sich bedecken mit: काएटक: Sugn. 2,248,20. 308,19. 37-चित überschüttet, bedeckt, reichlich versehen, versehen mit: वल्मीक उव — पर्वतापचिता ऽभवम् мвн. 3, 859. शाहलोपचिता भूमिम् 13,2828. प्र-द्राउनेशश्मश्रम् नार्वे मोपचितः Pankar. 182,11. मलोपचितसर्वाङ्ग MBH. 1,7627. क्मपन्ने रूपचितम् HARIV. 5834. मासापचित (leischig Sugn. 1,127,2. VA-RAH. Ван. S. 68, 4. वेह र्य हेमार्पाचत (स्यन्दन) Напіч. 13083. МВн. 4, 1669. कुएडलेापचित (शिर्म) 8,507. R. 6,77,29. म्रागारारभिनिष्क्रातः पवित्रे।-पचिता मृनिः M. 6,41. इट्यदेशकालवयःश्रद्धर्विग्विवधोद्देशोपचितैः सर्वे-रपि ऋत्भिः Buks. P. 5,4,16. गृणौरूपचितः सर्वेः R. 3,41,19. उपचिततर VJUTP.173. — Vgl. उपचय, उपचाट्य (nicht vom caus., wie u. d. W. angegeben ist), उपचित्, उपचिति, उपचेयः

- समुप pass. zunehmen, heranwachsen: गर्भात्प्रभृत्यरेगोा प: शनै: समुपचीयते Suga. 1,124,18. ग्रन्थि: 293,5.
- नि, partic. निचित्त 1) aufgeschichtet, aufgerichtet MBH. 14,2635. निचित्तं कृत्वा aufgeschichtet habend, in Schichten gebracht habend Suga. 1,32,13. मर्घानिचितं कृतं वा (गृरुम्) ein halb oder ganz vollendetes Haus Varah. Bru. S. 2) bedeckt, besteckt, besetzt, versehen mit AK. 3,4,59. H. 1473. जिद्दशानां शरीरै: मेदिनो । बभूव निचिता Hariv. 13812. R. 6,